शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
वर्ष: 3, अंक:4; जनवरी-जून, 2022
पृष्ठ संख्या : 91-100

धर्मवीर भारती-कृत 'कनुप्रिया' में मिथकीय योजना

✍ उदिप्त तालुकदार

शोध-सार:

कालनिरपेक्ष पुरा-कथाएँ लगभग प्रत्येक समाज-जीवन की लोक परंपरा की अन्यतम नींव होती हैं। बदलते समय के साथ इन पुरा-कथाओं की प्रासंगिकता कभी कम नहीं होती। रामायण की कथा, महाभारत की कथा, राधा-कृष्ण के प्रेमाख्यान आदि भारतीय समाज-जीवन की पुरा-कथाएँ हैं। इन पुरा-कथाओं की कालातीत प्रासंगिकता को देखते हुए युग चेतस साहित्यकार इन पुरा-कथाओं को अपनी रचनाओं की पृष्ठभूमि के रूप में ग्रहण करते हैं। साहित्य में ऐसी पुरा-कथाएँ जब आधुनिक संदर्भों में नवीन अर्थों का संयोजन करती हैं, उन्हें 'मिथक' की संज्ञा प्राप्त होती है। हिंदी साहित्य जगत में मिथकीय योजना की एक लंबी परंपरा रही है। नयी कविता के दौर में यह प्रवृत्ति अधिक प्रभावी ढंग से उभरी। इस दौर में मिथकीय योजना के आधार पर कथा का संयोजन करनेवाले एक अन्यतम सशक्त हस्ताक्षर हैं धर्मवीर भारती। भारती द्वारा रचित 'अंधायुग', 'कनुप्रिया' मिथकीय योजना की दृष्टि से उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। भारती ने 'कनुप्रिया' काव्य में राधा-कृष्ण के प्रेमाख्यान को नवीन आयाम देकर युद्ध से जर्जर समाज एवं मानव-जीवन की अवस्थाओं को दर्शाने का प्रयास किया है।

बीज शब्द: *मानवीय मूल्य, राधा-कृष्ण, युद्ध, प्रेम*

प्रस्तावना:

लोककथा, दंतकथा, पौराणिक कथा आदि को किसी भी समाज-जीवन के सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संदर्भ में अलग दर्जा प्राप्त है। भारतीय समाज में इस तरह की कथाओं की एक प्राचीन

परंपरा रही है । समय-समय पर इन कथाओं को रचनाकार अपनी कल्पना-शक्ति से नवीन स्वरूप, नवीन आयाम देकर साहित्य में स्थान देते आये हैं । रचनाकार की सृजनात्मक प्रतिभा के बल पर जब यह पुरा-कथा नवीन संदर्भों में प्रयुक्त होती है, तो उसे मिथक की संज्ञा मिलती है । प्रत्येक भाषा के साहित्य में समकालीन स्थिति को बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित करने हेतु रचनाकार अपनी संस्कृति से जुड़े विविध मिथकों का प्रयोग करते हैं । हिंदी साहित्य भी इसका अपवाद नहीं है । हिंदी साहित्य जगत के कई लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकारों ने अपनी कालजयी रचनाओं में मिथकीय योजना की है । इस शोधालेख में हिंदी साहित्य धारा की नयी कविता के सशक्त हस्ताक्षर धर्मवीर भारती के शिल्पी अंतःर्मन की अन्यतम उत्कृष्ट रचना 'कनुप्रिया' में अभिव्यक्त मिथकों पर विचार-विमर्श किया गया है ।

मिथक हिंदी काव्य-यात्रा के सहचर हैं, जीवनी शक्ति है । निश्चय ही मिथक-विन्यास के बिना काव्य-रचना और मिथकीय आलोचना के बिना समकालीन काव्य-विमर्श अधूरे बने रहेंगे । पुरा-कथाओं को किस संदर्भ में और क्यों पुनःजीवित कर रचनाकार नयी रचना की सृष्टि करते हैं , उसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक है । इस दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन के महत्वपूर्ण हो जाता है । राधा-कृष्ण के प्रेमाख्यान पर आधारित 'कनुप्रिया' में भारती ने क्यों और किस दृष्टि से मिथक का प्रयोग किया है, उसको समझना इस अध्ययन का उद्देश्य है ।

अध्ययन की पद्धति :

प्रस्तुत अध्ययन के दौरान आधार ग्रंथ के रूप में 'कनुप्रिया' रचना को लिया गया है । इस आधार ग्रंथ के साथ-साथ अन्य समीक्षात्मक ग्रंथों को संदर्भ ग्रंथ के रूप में ग्रहण किया गया है । इन ग्रंथों से प्राप्त तथ्यों के आधार पर विश्लेषणात्मक पद्धति के जरिए प्रस्तुत शोध-पत्र तैयार किया गया है ।

विश्लेषण :

युद्ध मानवीय बुद्धि का वह ध्वंसात्मक व्यापार है, जिससे सामाजिक संरचना में विघटनकारी परिवर्तन होता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के अनंतर ऐसे विघटनकारी परिवर्तनों ने संपूर्ण वैश्विक पटल को झकझोर दिया था। इससे जनसाधारण की मनोवृत्ति दूषित होने लगी थी। फलस्वरूप प्रेम, विश्वास जैसी मानवीय मूल्यों पर प्रश्न चिह्न खड़ा हो गया था और समाज पतनोन्मुख होने लगा था। द्वितीय विश्वयुद्ध से उत्पन्न इन विषम परिस्थितियों ने कला, साहित्य, धर्म एवं दर्शन में एक नये दृष्टिकोण को जन्म दिया। इसलिए तत्कालीन संवेदनशील साहित्यकार नये भावबोध और नयी शैली में साहित्य-रचना की ओर उन्मुख हुए। यह नया भावबोध एवं नयी शैली प्राच्य एवं पाश्चात्य दोनों प्रकार के साहित्य में दृष्टिगोचर होने लगी थी। इसमें युद्ध के कारण समाज में उत्पन्न विषम परिस्थियों को पृष्ठभूमि के रूप में ग्रहण कर साहित्य की रचना होने लगी। हिंदी साहित्य में नयी कविता के दौर में युग चेतस कवि धर्मवीर भारती द्वारा राधा-कृष्ण की प्रेमाख्यानक कथा को आधार बनाकर लिखी गयी भावप्रधान काव्य 'कनुप्रिया' ऐसी ही एक रचना है। 'कनुप्रिया' को क्रमशः 'पूर्वराग', 'मंजरी परिणय', 'सृष्टि संकल्प', 'इतिहास' और 'समापन' शीर्षकों में विभाजित किया गया है। इनमें से प्रथम तीन शीर्षकों में बहुमुखी प्रणय के विविध आयाम दृष्टिगोचर होते हैं तो, वहीं अंतिम दो शीर्षकों में राधा के प्रणम को नया परिप्रेक्ष्य दिया गया है। राधा-कृष्ण के प्रणय की कथा अत्यंत प्राचीन है। इस कथा को पृष्ठभूमि के रूप में ग्रहण कर लिखी गयी अधिकांश रचनाओं में केवल राधा के विरह को ही प्रधानता मिली। इस क्रम में संस्कृत के जयदेव, बांग्ला के चंडीदास, हिंदी के सूरदास, नंददास, बिहारी, रत्नाकर, हरिऔध आदि कवि आते हैं। परंतु धर्मवीर भारती ने राधा की भावानुकूल तन्मयता और सामयिक संदर्भों के प्रति उसकी चेतना को 'कनुप्रिया' काव्य में उकेरा है। कवि ने राधा के माध्यम से अस्तित्व के प्रश्न को उठाया है। कवि ने राधा द्वारा उठाये गये प्रश्नों के माध्यम से युद्ध से उत्पन्न विघटनकारी मूल्यों के स्थान पर मानव जीवन की तन्मयता के क्षणों के महत्व को प्रतिपादित करने का प्रयास किया है। इस

प्रकार कवि ने राधा-कृष्ण की कथा को विरह के उद्गार से ऊपर उठाकर आधुनिक संदर्भों में नवीन अर्थों का संयोजन कर एक युग सापेक्ष महत्व प्रदान किया है।

मिथकीय संकल्पना एवं हिंदी साहित्य:

मिथक शब्द अंग्रेजी के 'myth' का हिंदी रूप है। ऐसा माना जाता है कि हिंदी जगत को यह शब्द आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी से मिला। 'मिथ' मूलतः ग्रीक भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है - 'वाणी का विषय'। 'वाणी का विषय' से तात्पर्य है- एक कहानी, एक आख्यान, जो प्राचीन काल में सत्य माना जाता था और कुछ रहस्यमय अर्थ देता था। 'मिथ' शब्द के कुछ कोशगत अर्थ भी हैं- कोई पुरानी कहानी अथवा लोक विश्वास, किसी जाति का आख्यान, धार्मिक विश्वासों एवं प्रकृति के रहस्यों के विश्लेषण से युक्त देवताओं तथा वीर पुरुषों की पारंपरिक गाथा, कथन, वृत्त, किवदंती, परंपरागत कथा आदि। यदि इन सब अर्थों की मीमांसा की जाए, तो एक बात सब अर्थों के मूल में किसी न किसी सीमा तक लक्षित है- सबके मूल में कथा तत्व का होना।

पाश्चात्य परंपरा में मिथकों पर विचार-विमर्श की एक सशक्त परंपरा रही है। परंतु हिंदी में मिथकों को मोटे तौर पर कम ही परिभाषित किया गया है, जिसका कारण था भारतीय पुराणों को पुनरुत्थानवादी ग्रंथों के रूप में न देखा जाना। हिंदी में पुरा-कथाओं के प्राक-प्रवाह में विद्यमान समकालीन दर्शन को मिथक कहा गया। सबसे पहले आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने मिथक-मीमांसा प्रस्तुत की। उन्होंने कहा-

> मिथक तत्व उस सामूहिक मानव की भाव-निर्मात्री शक्ति की अभिव्यक्ति है जिसे कुछ मनोविज्ञानी आर्किताइल इमेज (आद्यबिंब) कहते हैं।(मिश्र 2014: 196)

डॉ. नगेंद्र 'मिथक' शब्द की उत्पत्ति अंग्रेजी से स्वीकार करते हैं। उनका मानना है-

> मिथक अंग्रेजी के मिथ शब्द का हिंदी पर्याय है और अंग्रेजी का मिथ शब्द यूनानी भाषा के शब्द माइथामस से व्युत्पन्न है; जिसका अर्थ है आप्तवचन या अतर्क्य कथन, जिसका प्रयोग अरस्तू ने फ्रेबिल (कथा-विधान) के रूप में किया है।(मिश्र 2014: 200)

मिथक आदिम मनुष्य के अग्रचेतना का संसार है जो आधुनिक तथा भविष्यपथ पर दिशा अथवा पथ प्रकाश का कार्य करता है । मिथक पौराणिक आदिम कथा का आधार लेकर समग्र जीवन को एक नयी व्याख्या देता हुआ मानव को आदिम भावों से आस्था जगाता है । मिथक मनुष्य तथा समुदाय की आस्था का प्रतीक है । मिथकों की वस्तु-परिधि में युग-युग के बेल को स्पर्श किया गया है । हिंदी में मिथकीय पुरा-कथाएँ केवल ऊपरी घटनाक्रमों तक अवरुद्ध नहीं था, बल्कि इनका प्रतीकात्मक स्वरूप था। इनके प्राक्तन बिंबों और प्रतीकों से नव-नवोद्भव अर्थ तरंगें निरंतर उठती रहती थीं, जिनका प्रयोग छठें-सातवें दशक के दृष्टिसंपन्न नए कवियों ने किया । जब इन कवियों ने समकालीन मनःस्थिति और मूल्यवादी परिस्थितियों के हल के लिए पुरा-प्रसंगों और पुराण कथाओं का सर्जनात्मक उपयोग करना शुरू की, तब उनके सृजनात्मक नव प्रयासों को मिथक कहा गया । ये मिथक टूटते विश्वासों, खंडित होते सामाजिक मूल्यों और मानवीयता के क्षरण को रोकने में सार्थक साबित हुए । हिंदी साहित्य में संप्रति वैदिक एवं पौराणिक आख्यानों के लिए मिथक शब्द का प्रयोग अधिक प्रचलित हो चुका है ।

हिंदी साहित्य निरंतर मिथकों से जुड़ा प्रतीत होता है । इसके विकासक्रम को देखने पर ज्ञात होता है कि हिंदी साहित्य का कोई भी युग मिथकीय अवचेतना से अछूता नहीं है । प्रत्येक युग में भावबोध से लेकर कलात्मक अभिव्यक्ति तक सर्वत्र मिथकों की उपादेयता दर्शनीय है । नाथों-विद्यापति की रचनाओं से लेकर भक्तिकालीन सगुण-निर्गुण धारा में मिथकीय योजना दृष्टिगोचर होती रही । परंतु हिंदी साहित्य के आधुनिक काल तक आते ही मिथक कथाएँ साहित्य के ऐसे चौराहे पर पहुँच गयी थीं, जहाँ से वे अनेक दिशाओं में आगे बढ़ सकती थीं । आधुनिक काल के भी द्विवेदी युग के साहित्य की मूल प्रवृत्ति इतिवृतात्मक होने के कारण काव्य के क्षेत्र में मिथकीय चेतना का बहुमुखी विकास हुआ । परंपरागत पूज्य भावनाओं के आलंबन मिथकीय पात्रों का सहज सामाजिक मनुष्य के रूप में अंकन

किया गया । इस तरह मिथकीय योजना एक नयी दिशा की ओर आगे बढ़ने लगी । छायावादोत्तर साहित्य में मिथक कथाओं पर आधारित वृहत साहित्य उपलब्ध है । छायावादोत्तर साहित्य में नयी कविता हिंदी की ऐसी धारा है, जिसमें पहली बार मिथक का सार्थक और मार्मिक उपयोग दिखाई पड़ता है । अनेक स्थलों पर यांत्रिक युग, युद्ध की विभीषिका के समानांतर मिथक के प्रसंगों का चुनाव किया गया है । साहित्य का इतिहास साक्षी है कि हिंदी के नए कवियों ने छायावादियों और प्रयोगवादियों की तरह 'मिथक' की कोई परिभाषा गढ़ने की कोशिश नहीं की । वास्तव में नयी कविता की प्रबंधात्मक रचनाओं में प्रयुक्त मिथक अप्रिभाषेय रहकर ही अपनी बहुआयामी भूमिका के निर्वाह में सफल रहे हैं । नयी कविता की विशिष्ट उपलब्धि के रूप में धर्मवीर भारती, दुष्यंत कुमार, कुँवर नारायण, नरेश मेहता आदि के नाम उल्लेखनीय हैं ।

'कनुप्रिया' और मिथकीय योजना:

धर्मवीर भारती की मिथकीय काव्य-कृति 'कनुप्रिया' छठे दशक के अंतिम दशक की एक महत्वपूर्ण रचना है । 'सूरसागर' की राधा तथा 'महाभारत' का युद्ध प्रसंग कनुप्रिया की कथा के मूल स्रोत हैं । कृष्ण काव्य परंपरा में 'सूरसागर' के पश्चात् राधा को उसकी संपूर्णता के साथ प्रस्तुत करनेवाली 'कनुप्रिया' महत्वपूर्ण कृति है । कवि ने राधा की चारित्रिक बुनावट में अपनी रागात्मकता का अधिकतम प्रयोग किया है । राधा के स्मृति-चित्रों के माध्यम से महाभारतकालीन कथा-संकेतों का चित्रण कवि की मौलिक उद्भावना है । कवि ने कथा के संकेतों में युगीन सच्चाई को जोड़कर देखने का प्रयास किया है । यही कारण है कि 'कनुप्रिया' एक नया पुराख्यानक प्रयोग है, जिसके कथासुत्रों में युग सत्य को अभिव्यक्ति मिली है । भावानुकूलता की दृष्टि से 'कनुप्रिया' मौलिक काव्य-कृति है । प्रस्तुत रचना में शृंगार वर्णन कवि का उद्देश्य नहीं है, अपितु तन्मयता के रागात्मक क्षण को सार्थक प्रतिपादित करने हेतु इस प्रेम-वर्णन की अवतारणा हुई है । कवि का मानना है कि प्रेम के अभाव में सत्य और न्याय

की महत्तर धारणा व्यर्थ हो सकती है। युद्ध की पृष्ठभूमि विनाशक होती है। इस भीषण विभीषिका में मानवीय मूल्यों को उबारने के लिए कवि ने राधा-कृष्ण को प्रणयाख्यानक धरातल पर रखकर युद्ध और प्रेम की अभिव्यंजना की है। 'एक प्रश्न' में कवि कहते हैं-

हारी हुई सेनाएँ, जीती हुई सेनाएँ
नभ को कँपाते हुए, जीती हुई सेनाएँ
भागे हुए सैनिकों से सुनी हुई
अकल्पनीय अमानुषिक घटनाएँ युद्ध की
क्या वे सार्थक हैं ?(भारती2014:68)

स्वातंत्र्योत्तर मिथकीय प्रबंध काव्यों में चरित्रों की विशिष्टता भी रही है। यहाँ तक कि शीर्षक भी चरित्र प्रधानता का परिचय देता है। भले ही वह चरित्र पौराणिक नाम से रहा हो, पर मानसिकता आधुनिक रही है। उन मिथकीय प्रबंधों के चरित्र की वाणी और व्यवहार से देवत्व की जगह साधारण की अनुभूति होती है। धर्मवीर भारती की 'कनुप्रिया' ऐसी ही एक रचना है। इसमें पारंपरिक राधा के स्थान पर नवीन भावना की प्रकृति की राधा का परिचय मिलता है। यह राधा काम-कला में निपुण तो है ही, कृष्ण की सृजन-संगिनी भी है। कवि ने अपनी कल्पना और संवेदना से राधा के चरित्र को मिथकीय फलक पर उद्घाटित करते हुए उसके विभिन्न आयामों को चित्रित किया है। इस रचना में प्रतिफलित मिथकीय पात्र राधा अपने जीवन में कृष्ण की भूमिका को स्वीकारते हैं, कृष्ण से ही उसका सारा संसार है, कृष्ण से उसके ज्ञान-भंडार की पूर्ति होती है। शायद इसलिए 'एक प्रश्न' में राधा कहती है-

तो भी मैं क्या करूँ कनु,
मैं तो वही हूँ
तुम्हारी बावरी मित्र

जिसे सदा उतना ही ज्ञान मिला

जितना तुम ने उसे दिया(भारती 2014:67)

परंतु ऐसा होने पर भी प्रस्तुत रचना में राधा कृष्ण से प्रश्न करती है, जिसका चित्रण 'एक प्रश्न' शीर्षक कविता में होता है । राधा को महाभारत का युद्ध सार्थक प्रतीत नहीं होता । इसलिए कृष्ण से प्रश्न करती हुई वह कहती है-

अर्जुन की तरह कभी

मुझे भी समझा दो

सार्थकता है क्या बंधु ? (भारती 2014:69)

'सेतु: मैं' में राधा कृष्ण से कहती है-

सुनो कनु, सुनो

क्या मैं सिर्फ सेतु थी तुम्हारे लिए

लीलाभूमि और युद्धक्षेत्र के

अलंघ्य अंतराल में !(भारती 2014:60)

अतः 'कनुप्रिया' रचना में प्रश्न करती हुई राधा का चरित्र उभरती है । वह युद्ध के आधार पर कृष्ण के इतिहास निर्माण की प्रक्रिया को सीधे तौर पर अस्वीकार नहीं करती । इस प्रकार 'कनुप्रिया' के द्वारा एक चेतन नारी पात्र उभरकर आती है ।

जिस प्रकार उत्सव पुरुष नरेश मेहता ने 'संशय की एक रात' नामक रचना में राम को संशयग्रस्त दिखाया है, वैसे ही 'कनुप्रिया' में राधा की दृष्टि से कृष्ण का संशयग्रस्त स्वरूप भी स्थान विशेष में नज़र आता है । कवि ने कनु का सार्थक उपयोग आधुनिक मानव के आंतरिक द्वंद्व, युद्ध के

औचित्य तथा अस्मिता के संकट के समाधान के रूप में किया है । कृष्ण ने जिस साधन के जरिए इतिहास निर्माण करने की कोशिश की, उसी साधन के फलस्वरूप वह द्वंद्व में है, संशय में है । इसका प्रतिफलन 'शब्द: अर्थहीन' में राधा की निम्नोक्त पंक्तियों से हो जाता है-

न्याय-अन्याय, सद्-असद्, विवेक-अविवेक-

कसौटी क्या है ? आखिर कसौटी क्या है ?(भारती 2014:75)

इस प्रकार धर्मवीर भारती ने मिथकीय पात्र राधा और कृष्ण को आधुनिक संदर्भ में मनोवैज्ञानिक स्तर पर निरूपण किया है । द्वितीय महायुद्ध के धरातल पर उत्पन्न घोर निराशा, अव्यवस्था, पीड़ा से खंडनात्मक मनोवृत्ति का विस्तार 'कनुप्रिया' के माध्यम से हुआ है । वैश्विक उत्थान का महत्वपूर्ण कार्य कवि की महत्वकांक्षा रही है और इस दिशा में जीवन के प्रति आस्थाभाव जगाकर उन्मुक्ति के प्रयास में यह मिथकीय रचना कार्यरत है ।

निष्कर्ष:

नयी कविता में मिथकों को काव्य-मनोबल के रूप में प्रयुक्त किया गया । मिथकों के इसी काव्य-मनोबल ने नयी कविता को समय-सापेक्ष बहुआयामी आकार दिया । धर्मवीर भारती ने मिथकीय धरातल पर अपने युग के मानवीय जीवन में अकस्मात उत्पन्न विषमताओं, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक मूल्यों के बेतहाशा क्षरण और विश्वस्तर पर जटिल युद्ध-संत्रासों के मनुष्य के सैतानी संक्रमणों के नए अध्याय लिखे । 'कनुप्रिया' का आधार पुराख्यान भले ही हो, परंतु इनके माध्यम से तत्कालिक समसामयिक समस्याओं का भली-भाँति चित्रण किया गया है । 'कनुप्रिया' जैसे मिथक-काव्य की पृष्ठभूमि में परंपरागत दार्शनिक तत्वों की अधिकता होने से उसमें सन्निहित ब्रह्म, जीव और जगत् की सार्थकता को समीक्षकों ने मानवीय धरातल पर रखकर समीक्षा की है । इस मिथक-काव्य में भारती ने मानवीय सत्ता की अंतश्चेतना और बहिर्मुखी वृत्तियों को उजागर करने में अपनी कारयित्री प्रतिभा

का परिचय दिया है। यह ही कारण है कि 'कनुप्रिया' में संगुंफित मिथकों की ध्वनियाँ आज भी अपनी गुणवत्ता बनायी हुई हैं। पौराणिक मिथकाश्रित कथा के जरिए आधुनिक भावस्पंदन निरूपण में निःसन्देह 'कनुप्रिया' एक सफल रचना काही जायेगी।

ग्रंथ-सूची:

कुमार, रश्मि. नई कविता के मिथक काव्य. नयी दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2009.

भारती, धर्मवीर. कनुप्रिया. नयी दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2014.

मिश्र, भगीरथ.पाश्चात्य काव्यशास्त्र.वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2014.

संपर्क-सूत्र:
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
आर्य विद्यापीठ महाविद्यालय(स्वतंत्र)
ई-मेइल: udiptatalukdar94@gmail.com